सत्यमेव जयते

श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर का पंचम् दीक्षान्त समारोह

दिनांक 26 दिसम्बर, 2020 **समय दोपहरः 12.00 बजे**

राजभवन, जयपुर

लोकसभा के माननीय अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी, उच्च शिक्षा राज्य मंत्री श्री भंवर सिंह भाटी जी, कुलपति प्रो. विनोद कुमार सिंह जी, विश्वविद्यालय प्रबन्ध बोर्ड व विद्या परिषद् के सदस्यगण, शिक्षकगण, कुलसचिव, प्रिय विद्यार्थियों, ऑनलाईन माध्यम से जुड़े अतिथिगण और प्रेस एवं मीडिया के प्रतिनिधिगण। आप सभी का मैं अभिनंदन करता हूं।

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय द्वारा ऑनलाईन माध्यम से आयोजित पंचम् दीक्षान्त समारोह में उपस्थित होकर मुझे बेहद प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। मैं इस अवसर पर आज इस समारोह में उपाधि एवं पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अपनी ओर से बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

बीकानेर भाईचारे, सद्भाव और अपनापे की संस्कृति का सांस्कृतिक शहर है। धर्म धरा इस शहर में परस्पर मेल जोल और साम्प्रदायिक सौहार्द्र की देशभर में अपनी पहचान है। देशनोक की करणी माता का मंदिर यहां है तो सांख्य दर्शन के प्रणेता महर्षि कपिल की भी तपोभूमि कोलायत भी आपके इसी जिले में है।

पाटा संस्कृति के इस शहर के बारे में जब कभी किसी से सुनता हूं, तो मन सुखद अहसास से भर उठता है। बहुत पहले मैंने बीकानेर के शायर अजीज आजाद की लिखी शायरी की पंक्तियां किसी से सुनी थी, आज भी वह याद है। उन्होंने लिखा है–

मेदा दावा है कि सब जहर उतर जाएगा
तुम मेरे शहर में दो दिन ठहरकर तो देखो।

मानवीयता के ऐसे सरोकारों वाले आपके इस बीकानेर शहर में आपका यह महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय शिक्षा और शोध का देश का बड़ा केन्द्र बने, ऐसी मेरी कामना है।

मुझे यह बताया गया है कि गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य किए जाने के साथ ही आपके विश्वविद्यालय द्वारा 2208 शोधग्रंन्थ 'शोध गंगा' पोर्टल पर अपलोड किए गए हैं और पूरे भारत वर्ष में आपका विश्वविद्यालय इस क्षेत्र में प्रथम स्थान पर रहा है। इसके लिए मेरी तहेदिल से बधाई और शुभकामनाएं।

दीक्षान्त का अर्थ होता है प्रारम्भ करना। शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी नव जीवन की शुरूआत ही तो करते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि वे अपने अर्जित ज्ञान को देश और समाज के हित में समर्पित करें।

गौतम बुद्ध अपने शिष्यों को दीक्षा देते समय **'अप्प दीपो भव'** का उपदेश देते थे। वह कहते थे, अपने दीपक स्वयं बनें। मैं यह मानता हूं कि अंधकार में दूर जलता हुआ छोटा सा दीपक भी यात्री को सही दिशा बता देता है। पर यदि अपने आचार्यों से प्राप्त ज्ञान तथा संस्कारों से व्यक्ति स्वयं ही दीपक बन जाए, तो वह जीवन भर अपने साथ–साथ दूसरों को भी ठीक राह दिखा सकता है। शिक्षा का असली उद्‌देश्य भी यही है कि सीखे गए, प्राप्त किए गए ज्ञान को हम समाज को आलोकित करने में लगाएं।

शिक्षा ही वह परम स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारे पथ प्रदर्शन का कार्य करती है।

मेरा इस अवसर पर विश्वविद्यालय के आचार्यों से भी अनुरोध है कि वे बदलते हुए समय और संदर्भों के साथ अपने आपको अपडेट रखें। केवल पाठ्‌यपुस्तकों का अध्ययन ही विद्यार्थियों को नहीं कराएं बल्कि नये नये

अनुसंधानों से भी उन्हें अवग कराएं। किताबी ज्ञान जरूरी है परन्तु स्थान विशेष की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा में स्थतियों–परिस्थतियों से सबंधित समस्याओं के निराकरण के लिए भी विद्यार्थियों में ज्ञान का प्रवाह करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

मैं यह मानता हूं कि अच्छे शिक्षण की सार्थकता यही है कि उससे विद्यार्थी हर क्षण कुछ न कुछ नया सीखने के लिए प्रेरित हो। आचार्य का अर्थ ही यह होता है कि अपने आचरण से दूसरों के मन में गति पैदा करे। शिक्षक पढाने के साथ–साथ अपने आचरण से ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करे जिससे जिससे विद्यार्थी संस्कारों की सीख ले सके।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को गढ़ना है। इसलिए वह केवल औपचारिक नहीं रहे बल्कि उसका संबंध व्यक्तित्व के निर्माण से भी हो। उससे विद्यार्थियों में मौलिक सोचने की शक्ति विकसित हो। भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र रहा है –

तमसो मा ज्योतिर्गमय

यानी अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर हम चलें। मुझे विश्वास है, इस विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने

वाले विद्यार्थी परिवार, समाज और राष्ट्र में नवीन चेतना पुंज के रूप में स्वयं प्रकाशित होने के साथ ही जन–जन को आलोकित करेंगें।

देश में व्यापक विमर्श के बाद नई शिक्षा नीति तैयार की गयी है। जन आशाओं और अपेक्षाओं के अनुरूप बनायी गयी नई शिक्षा नीति ऐसी है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर तैयार की गयी है।

मैंने विश्वविद्यायालयों में नई शिक्षा नीति को व्यवहार में लागू करने के लिए निरन्तर संवाद किया है और इस संबंध में सभी विश्वविद्यालयों का तीन दिवसीय वर्चुअल सम्मेलन भी हमने किया है। मैं इस अवसर पर फिर से आह्वान करता हूं कि सभी विश्वविद्यालय नई शिक्षा नीति की मंशा को समझते हुए अपने यहां आधुनिक समय की मांग के अनुरूप ई–पाठ्यक्रम विकसित करे।

विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल लैब की स्थापना करें और राष्ट्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी फोरम में अपनी अभी से भागीदारी सुनिष्चित करें।

विश्वविद्यालयों को चाहिए कि वे अपने यहां नवीनतम शोध और अनुसंधान की ऐसी संस्कृति विकसित करे जिससे विद्यार्थी बहुत सारी किताबों के संदर्भ से एक पुस्तक तैयार करने की सोच की बजाय अपने स्वयं के अनुभव, अध्ययन से मौलिक स्थापनाओं की ओर प्रवृत हो सके। मैं स्पष्ट यह मानता हूं कि शोध और अनुसंधान के विषय विद्यार्थियों पर थोपे नहीं जाए बल्कि उनकी रूचि को ध्यान में रखते हुए इस तरह से निर्धारित किए जाएं कि बाद में वृहद स्तर पर समाज का उस शोध का लाभ व्यवहार में मिल सके।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने **"वोकल फॉर लोकल"** का जो नारा दिया है, उसके पीछे मंशा यही देश में स्वदेशी का भाव तेजी से विकसित हो। स्थानीय संसाधनों का समुचित उपयोग, संस्कृति और परम्पराओं का संरक्षण यदि किया जाता है तो इसका दूरगामी लाभ देश और समाज को मिलेगा। स्थानीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग से ही देश व प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने में हम तेजी से अग्रसर हो सकते हैं। इस पर कार्य करने की जरूरत है।

जरूरत इस बात की भी है कि विद्यार्थी **"आपदा को अवसर"** के रूप में बदलना सीखे। कोविड ने पूरी मानव जाति को नुकसान पहुंचाया है परन्तु सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रयोग से जीवन इस आपदा में भी पूरी तरह से थमा नहीं। अध्ययन–अध्यापन की नवीन तकनीक के विकास से विश्वविद्यालयों में इस आपदा में भी शिक्षण निरन्तर जारी रहा है। यह महत्वपूर्ण है। मैं यह मानता हूं कि प्रौद्योगिकी के उपयोग के जो अवसर इस दौरान हमें मिले हैं, उनका और अधिक बेहतर उपयोग शिक्षा क्षेत्र में किया जाए। इस बात पर ध्यान दिया जाए कि कैसे स्थानीयता की उपलब्ध धरोहर को वैश्विक तकनीक से भविष्य के लिए संरक्षित किया जाए।

भारतीय संस्कृति **"वसुधैव कुटुम्बकम"** के मंत्र पर आधारित है। हमने पूरे विश्व को एक परिवार मानते हुए ही सदा मानवता के लिए कार्य किया है। हमारे लिए आत्मनिर्भरता का भी मूल संसार भर में सुख, सहयोग एवं शांति के भाव का विकास है।

नवीन शिक्षा नीति मानवीय क्षमताओं को पूर्णता तक ले जाने, समता मूलक समाज निर्माण पर आधारित है। शिक्षण संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने यहां

रोजगारोन्मुखी, कौशल विकास के ऐसे पाठ्यक्रम इस नीति के तहत प्रारंभ करें जिनसे युवा शक्ति का सर्वांगीण विकास हो।

मैं यह मानता हूं कि आने वाले 10 वर्षों में विश्व की सबसे बड़ी युवा शक्ति के रूप में भारत विकसित होगा। इस परिदृश्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति आशा और आत्मविश्वास को जागृत करने का एक सजीव दस्तावेज है। भारतीयता को केन्द्र में रखकर विश्व को हम नेतृत्व प्रदान करें, इसके लिए विश्वविद्यालयों में कार्य होना चाहिए।

मुझे यह बताया गया है कि कोविड के कारण पूर्व में स्थगित हुई परीक्षाओं को आपके विश्वविद्यालाय ने न केवल आयोजित किया बल्कि सबसे पहले परीक्षा परिणाम जारी कर भी रिकॉर्ड बनाया है।

मेरे लिए यह जानना सुखद है कि गत तीन सत्रों से निरन्तर राज्य में सबसे पहले परीक्षा घोषित कर यह उपलब्धि महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय हासिल कर रहा है। इसके लिए मेरी बधाई और शुभकामनाएं।

इस अवसर पर मुझे महर्षि अरविन्द का कहा हुआ स्मरण हो रहा है। उन्होंने कहा था कि **शिक्षण एक विज्ञान है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।** मेरा भी यही मानना है कि शिक्षण रूपान्तरण की प्रक्रिया है। इसलिए पढ़ाने वाले शिक्षकों से मैं अपेक्षा करता हूं कि वे विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा दे जिससे न केवल उनका सर्वांगीण विकास हो बल्कि देश और समाज भी उनकी शिक्षा से संपन्न हो सके।

मैं उम्मीद करता हूं कि विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ ही शोध और अनुसंधान की ऐसी संस्कृति अपने यहां विकसित करेगा जिसका लाभ व्यापक स्तर पर समाज को मिलेगा। विश्वविद्यालय से मेरी यह भी अपेक्षा है कि भविष्य में विद्यार्थी हित को सर्वोपरी मानते हुए शैक्षणिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करें।

एक बार पुनः उपाधि एवं पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफल जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं। विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, कर्मचारीगण और प्रिय

विद्यार्थियों को भी दीक्षान्त समारोह के लिए मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

धन्यवाद। जय हिन्द।